अनुभववाद →

अनुभववाद के जन्मदाता लॉक

ज्ञानमीमांसा —

दो पक्ष

1. खण्डन पक्ष — जन्मजात प्रत्यय का खण्डन
2. मण्डन पक्ष — इन्द्रियानुभव को प्रमुख साधन मानते हैं।

II जन्मजात प्रत्ययों के खण्डन के लिए तर्क: —

1. बुद्धिवादी तार्किक व्यावहारिक [illegible] तथा [illegible] ज्ञान को जन्मजात मानते हैं। लॉक के अनुसार ऐसा कोई तार्किक या व्यावहारिक सिद्धांत नहीं जिसे सार्वभौम के लोग स्वीकार करते हैं।
2. बुद्धिवादी नैतिक नियम को भी जन्मजात मानते हैं जबकि नैतिक नियम निरपेक्ष नहीं सापेक्ष होते हैं
3. बुद्धिवादी ईश्वर प्रत्यय को जन्मजात मानते हैं
4. बुद्धिवादी तादात्म्य का नियम एवं विरोध का नियम दोनों को जन्मजात मानते हैं पर लॉक मानते हैं कि [illegible] बालक [illegible] को ज्ञान भी नहीं रहता।

मण्डन —

लॉक इन्द्रियानुभव को ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन मानते हैं। उनके अनुसार समस्त ज्ञान का स्रोत अनुभव है। जन्म के समय हमारा मन कोरे कागज, कोरी स्लेट के समान रहता है। हम पर बुद्धि भी [illegible] नहीं रहता है सभी ज्ञान इन्द्रियानुभव से प्राप्त होते हैं।

~~इन्द्रिय~~ इन्द्रियानुभव के दो पक्ष हैं —

1. संवेदना (Sensation) — ज्ञानेन्द्रियों से बाह्य वस्तु का ज्ञान
2. स्वसंवेदना (Reflection) — आन्तरिक जगत की अनुभूति
   Ex. — सुख-दुःख का ज्ञान

यही दोनों ज्ञान के दो द्वार हैं।

I प्रत्यय (Idea) लॉक के अनुसार ज्ञान प्रत्ययों से निर्मित होता है।
प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं

(1) सरल (simple)
(2) मिश्रित (Mixed)

सरल प्रत्यय — सरल विचार संवेदन के द्वारा (sensation) प्रतिबिंब से या दोनों से आते हैं। अर्थात बाह्य या आन्तरिक प्रत्यक्ष से उत्पन्न प्रत्यय है।

सरल प्रत्यय चार प्रकार के होते हैं —

1. जो एक इन्द्रिय के संवेदन द्वार से आत्मा में प्रवेश करते हैं (Ex— रंग, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द आदि
2. जो एक से अधिक इन्द्रियों के संवेदन द्वार से आत्मा में प्रवेश करते हैं। Ex: — विस्तार, आकार, गति आदि
3. जो अन्तःकरण के प्रतिवेदन द्वार से आत्मा में प्रविष्ट होते हैं। Ex:— स्मृति, सन्देह, विश्वास, संकल्प आदि
4. जो बाह्य इन्द्रियों के संवेदन और अन्तःकरण के प्रतिवेदन, इन दोनों द्वारों से आत्मा में आते हैं। Ex— सुख, दुख

मिश्रित प्रत्यय — मिश्र विचार/प्रत्यय सरल विचारों के योग/मिश्रण से बनता है। इन विचारों को मिश्रण करने में आत्मा सक्रिय होती है, किन्तु इनको उत्पन्न नहीं करती। जिस प्रक्रिया से आत्मा सरल विचारों से मिश्र विचार बनाती है, उसकी छः अवस्थाएँ हैं

1. सरल प्रत्ययों का ग्रहण
2. सरल प्रत्ययों का धारण
3. प्रत्ययों का पृथक्करण
4. सरल प्रत्ययों का संतुलन
5. प्रत्ययों का मिश्रण
6. नामकरण

मिश्र प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं —

1. पर्याय या प्रकार (Modes)
2. द्रव्य (Substance)
3. सम्बन्ध (Relation)

गुण ~~द्रव्य~~ ⇒ लॉक के अनुसार द्रव्य की वह शक्ति है जिसके कारण वह हमारी आत्मा में विचार उत्पन्न करती है, वह गुण कहलाता है।

* द्रव्य अज्ञेय है (Unknowable)

द्रव्य ← गुणों का आधार द्रव्य कहलाता है। हमारा विचार है कि द्रव्य न नहीं होता जिसके गुण न होते हैं।

गुणों के प्रकार — दो / 2

गुण के दो प्रकार हैं —

(1) मूल गुण (Primary quality)
(2) उपगुण (Secondary quality)

मूलगुण/ प्राथमिक गुण - वे हैं जो वस्तुतः द्रव्यों में पाये जाते हैं और जो हमारी आत्मा में अपने अनुरूप विचार उत्पन्न करते हैं। मूल गुण द्रव्यों के वास्तविक धर्म हैं। जैसे — विस्तार, आकार, गति, स्थिति, ठोसता।

उपगुण - वस्तु के स्वतंत्र धर्म नहीं। मूलगुणों के माध्यम से उत्पन्न होते हैं। अतः उपगुणों का कारण मूल गुण है। मूलगुण अपनी उत्पत्ति और ज्ञान दोनों दृष्टि से स्वतंत्र हैं। इनकी उत्पत्ति मूल गुणों के कारण होती है तथा इनका ज्ञान भी ज्ञाता पर निर्भर होता है।

* द्रव्य (Substance) "अज्ञेय"

लॉक के अनुसार द्रव्य तीन प्रकार के होते हैं —

(1) भौतिक (जड़ द्रव्य)
(2) आध्यात्मिक (आत्मा)
(3) ईश्वर

ज्ञान के स्तर (Degree of Knowledge)

लॉक के अनुसार ज्ञान के तीन स्तर हैं —

(1) अन्त प्रत्यक्ष ज्ञान (Intutive knowledge)
(2) बाह्य प्रत्यक्ष ज्ञान (Sensitive knowledge)
(3) परोक्ष ज्ञान (Demonstrative knowlage)